बैल्वा के लिए मत

राष्ट्रपति पद की होड़ में जुटी
एक स्त्री की सच्ची कहानी

लेखन: सुदीप्ता बर्धन क्वालैन, चित्र: कोर्टनी ए. मार्टिन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

1884 में अमरीका में जब राष्ट्रीय चुनाव हुए तब सिर्फ़ पुरुष ही मतदान कर सकते थे। इस कानून को नाजायज़ मान बैल्वा लॉकवुड ने एक साहसी कदम उठाया। उन्होंने राष्ट्रपति के पद का चुनाव लड़ा। और उनके पहले ऐसी ज़ुर्रत करने वाली महिलाओं के विपरीत उन्हें मत भी मिले।

जिस समय बैल्वा राष्ट्रपति पद के लिए खड़ी हुईं, औरतों को पुरुषों के समान हक़ नहीं थे। पर बैल्वा ज़िन्दगी भर औरतों की बराबरी के लिए जूझती रहीं। और यह करते हुए उन्होंने कई सीमाओं को लांघा। वे पढ़ने के लिए कॉलेज गईं, तब उन्होंने वक़ालत की पढ़ाई की, अमरीका की सर्वोच्च अदालत में कई मामलों में जिरह की, और तो और वॉशिंगटन डी.सी. की सड़कों पर तिपहिया साइकिल की सवारी तक की! हालांकि राष्ट्रपति पद के अपने चुनावी अभियान में उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, वे महिलाओं के लिए बराबरी के हक़ों की मांग से कभी डिगी नहीं। यही कारण था कि उन्हें उस ज़माने में भी लोगों का सम्मान और उनके मत मिल सके।

बैल्वा की कहानी कम ही लोग जानते हैं, पर वे आज के पाठकों को भी प्रेरित करती हैं। बैल्वा के समय से आज तक आए तमाम बदलावों के बावज़ूद हमें कई चीज़ों के लिए लगातार संघर्ष जारी रखना है, बैल्वा पाठकों को यही करने की राह दिखाती हैं।

बैल्वा के लिए मत

राष्ट्रपति पद की होड़ में जुटी एक स्त्री की सच्ची कहानी

लेखन: सुदीप्ता बर्धन क्वालैन

चित्र: कोर्टनी ए. मार्टिन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जब बैल्वा लॉकवुड दस बरस की थी, उसने कहीं पढ़ा कि अगर इरादा पक्का हो तो कोई भी इन्सान पहाड़ को हिला सकता है।

नन्ही बैल्वा ने कहावत के शाब्दिक मतलब को सच समझा।

बेशक उसने कोई बड़ा पहाड़ हिलाने के कोशिश नहीं की - आख़िर वह बच्ची ही थी। उसके लिए एक छोटी पहाड़ी ही सही थी। उसने बिलकुल सही आकार की एक पहाड़ी तलाश ली जो उसके घर के बाहर ही थी। तब उसने अपनी पूरी इच्छाशक्ति उसे हिलाने पर केन्द्रित की। उसे ख़ुद पर पूरा यक़ीन था, उसका इरादा भी पक्का था। चाहे पहाड़ी ज़रा-सी ही क्यों न हिले।

पर तमाम कोशिशों के बावजूद पहाड़ी टस से मस नहीं हुई।

पर बैल्वा ने पहाड़ों को हिलाने की अपनी कोशिश ज़िन्दगी भर बन्द नहीं की।

बैल्वा न्यू यॉर्क की नियाग्रा काउंटी (ज़िले) में पैदा हुई थीं। वे अपने माता-पिता की पाँच सन्तानों में दूसरी थीं। वे खुद को एक साधारण, गाँव की लड़की और ग़रीब किसान की बेटी कहा करती थीं। पर इन साधारण परिस्थितियों ने बैल्वा को बुलन्द मकसदों को हासिल करने से नहीं रोका।

पहाड़ी को जगह से हटाने वाली बचपन की घटना के सालों बाद, शादी और बच्चा होने और तब विधवा हो जाने के बाद, कॉलेज स्नातक बनने, शिक्षिका के रूप में काम करने, स्त्रियों के मताधिकार के लिए समूह बनाने, और दूसरी शादी करने के बाद, बैल्वा ने तय किया कि वे वक़ील बनना चाहती हैं। उस वक़्त वे उनचालीस वर्ष की थीं, वे चतुर व जोशीली थीं और कड़ी मशक्कत करने को तैयार थीं। पर मुश्किल यह थी कि कोई भी लॉ स्कूल (विधि शाला) उन्हें दाख़िला देने को तैयार नहीं था।

एक ने लिखा:

मिसेज बैल्वा लॉकवुड,

मैडम - कोलम्बियन कॉलेज के शिक्षक मण्डल ने इस संस्था के विधि विभाग में प्रवेश के लिए आपके अनुरोध पर विचार किया है, आपसी सलाह-मशविरे के बाद शिक्षक मण्डल इस फ़ैसले पर पहुँचा है कि ऐसा करना मुफ़ीद नहीं होगा। इससे युवा पुरुषों का ध्यान भटक सकता है।

दो दूसरी विधि शालाओं ने तो उनके आवेदन का जवाब देने की ज़हमत ही नहीं उठाई।

बैल्वा के सपनों के आगे एक पहाड़ अड़ा-खड़ा था।

बैल्वा ने अपनी राह को रोकने वाले पहाड़ को हिलाने-हटाने का काम शुरू किया। इस बार वे नाकाम नहीं होने वाली थीं।

बैल्वा को नई बनी नैशनल युनिवर्सिटी की विधि शाला के बारे में पता चला। उन्होंने सुना कि उसके निदेशक यह दावा कर रहे हैं कि वे अपनी विधि शाला के दरवाज़े पुरुषों के साथ स्त्रियों के लिए भी खोलना चाहते हैं। बैल्वा ने वहाँ आवेदन भेजा। उन्होंने बैल्वा समेत चौदह महिलाओं को वकालत पढ़ने के लिए आमंत्रित किया।

पर विश्वविद्यालय ने महिलाओं के लिए कुछ भी आसान नहीं किया। पुरुषों के साथ एक ही कक्षा में बैठने की, या एक ही कक्ष में बैठ परीक्षाएं देने की स्त्रियों को इजाज़त नहीं थी। पुरुष छात्र भी यह नहीं चाहते थे कि औरतें उनके साथ पढ़ें, और यह वे बेहिचक जताते भी थे। पुरुष सहपाठियों ने अधिकारियों से शिकायत भी की, कहा कि वे स्त्रियों के साथ नहीं पढ़ेंगे। कुछ ही समय बाद बारह महिलाएं विश्वविद्यालय छोड़ गईं। पढ़ाई का दबाव और पुरुष सहपाठियों का बैर उनसे झेला ही नहीं गया।

बैल्वा उन दो महिलाओं में एक थीं जिसने पाठ्यक्रम पूरा किया। इतनी मेहनत-मशक्कत और पुरुषों की ही तरह सब कुछ करने के बावजूद विश्वविद्यालय ने उन्हें उनका डिप्लोमा (प्रमाण-पत्र) नहीं दिया।
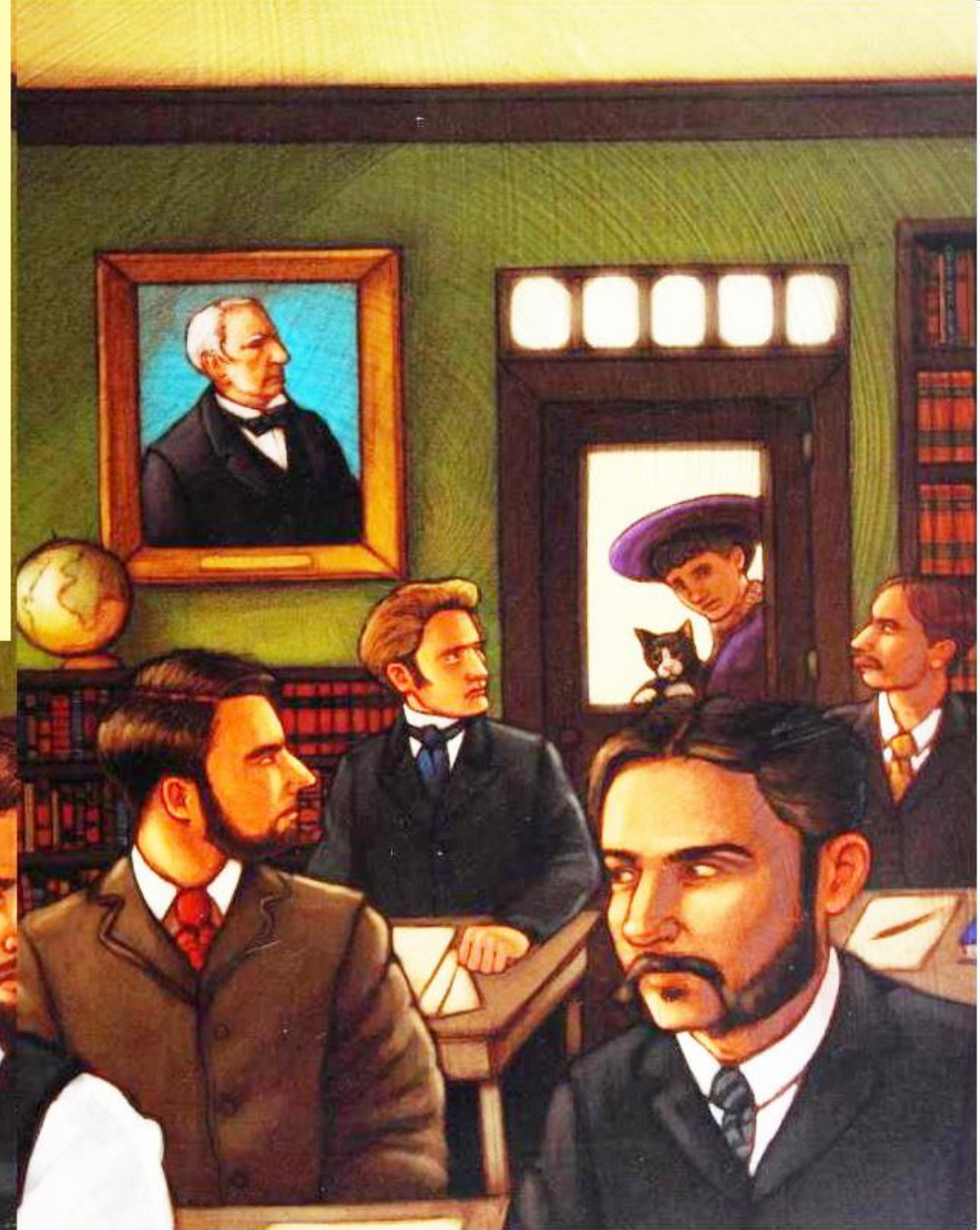
पर बैल्वा हार कब मानने वाली थीं।

3 सितम्बर 1873 में उन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति युलिसीस एस. ग्रान्ट को, जो नैशनल युनिवर्सिटी लॉ स्कूल के अध्यक्ष भी थे, एक ख़त लिखाः

महामहिम यू.एस. ग्रान्ट, राष्ट्रपति, संयुक्त राज्य अमरीका,

महोदय,

आप नैशनल युनिवर्सिटी लॉ स्कूल के अध्यक्ष हैं, हैं ना। अगर आप इस संस्था के अध्यक्ष हैं तो मैं कहना चाहती हूँ कि मैं विधि शाला का पाठ्यक्रम उत्तीर्ण कर चुकी हूँ और अपना डिप्लोमा पाने की न केवल हक़दार हूँ, बल्की मैं उसकी मांग करती हूँ। अगर आप इस संस्था के अध्यक्ष नहीं हैं, तो मैं चाहूँगी कि आप इसके कागज़ातों पर से अपना नाम हटवाएं और दुनिया को वह होना न जताएं जो आप दरअसल हैं ही नहीं।

सादर,

बैल्वा लॉकवुड

ख़त लिखने के कुछ ही दिनों बाद बैल्वा को उनका डिप्लोमा मिल गया। और तो और उस पर खुद राष्ट्रपति के दस्तख़त थे। अब वे वकील थीं।

उन्होंने अपनी राह में अड़े-खड़े पहाड़ को हटा दिया था और साथ ही एक बेहद ज़रूरी पाठ भी सीखा। उनके अपने शब्दों में:

"इच्छाशक्ति, संकल्प और अथक मेहनत से मैं हर वह चीज़ हासिल कर सकती थी, जो मैं हासिल करना चाहती थी।" वे यह भी जानती थीं कि वे कभी भी खुद पर यकीन करना, खुद के लिए सोचना बन्द नहीं करेंगी और कभी हिम्मत नहीं हारेंगी।

बैल्वा ने बार-बार दुनिया को दिखाया कि वे क्या कर सकती हैं। और जब-जब उन्होंने कुछ किया, कई लोग उनके नक़्शे-कदम पर चले। नैशनल युनिवर्सिटी के लॉ स्कूल से स्नातक बनने वाली वे पहली स्त्री थीं ही। वे फैडरल (संघीय) अदालत में वक़ालत करने वाली पहली महिला बनीं और अमरीका की सर्वोच्च अदालत के समक्ष जिरह करने वाली पहली महिला भी बनीं। यह अधिकार पाने के साल भर के अन्दर ही बैल्वा ने एक काले वकील सैम्युएल आर. लोवरी को यही विशेषाधिकार पाने में मदद की। लोवरी की समानता में उनका उतना ही पक्का यकीन था, जितना खुद की समानता में।

बैल्वा एक सम्मानित और असरकार पैरोकार, सार्वजनिक वक्ता और महिला अधिकारों की सक्रियकर्मी थीं। वॉशिंगटन डी.सी. में तिपहिया साइकिल चलाने वाली वे पहली महिला थीं और उसे वे दस मील फ़ी घंटे की रफ्तार से चला पाती थीं। बैल्वा द्वारा साइकिल की सवारी करने के दो या तीन सालों में इतनी महिलाओं ने साइकिल चलाना शुरू कर दिया कि *न्यू यॉर्क टाइम्स* ने लिखा - "अब तिपहिया साइकिल पर सवार स्त्री किसी घोड़े पर सवार स्त्री से ज़्यादा ध्यान खींचती है।"

1884 में चौवन वर्ष की उम्र में बैल्वा फिर एक बार अव्वल रहीं। इस बार वे अमरीका की वह पहली स्त्री बनीं जिसने आधिकारिक रूप से राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ा हो।

यह वह समय था जब औरतों को मत देने का हक़ तक नहीं था। बैल्वा सालों से इस स्थिति को बदलने वाले कानून को पारित करवाने के लिए जूझ रही थीं। वे 1880 और 1884 में रिपब्लिकन पार्टी के दो अधिवेशनों में गईं। इस उम्मीद से कि महिलाओं को मत देने के हक़ को वे पार्टी के कार्यक्रम में शामिल करवा सकेंगी। पर दोनों ही बार उनको कोई तवज्जो नहीं दी गई।

बैल्वा इससे इतना निराश हुईं कि उन्होंने *विमेन्स् हैराल्ड ऑफ़ इन्डस्ट्री* को लिखा - "स्त्रियों को महत्त्वपूर्ण पदों के लिए नामांकित क्यों न किया जाए...समय आ गया है कि हमारा अपना दल हो, अपना मंच हो और हमारे द्वारा नामांकित उम्मीदवार हों। हम महिलाओं को तब तक समान हक़ नहीं मिलेंगे जब तक हम उन्हें खुद न लें, तब तक सम्मान नहीं मिलेगा जब तक हम उसे खुद अर्जित न करें।"

बैल्वा को यह अहसास हुआ कि हालांकि स्त्रियाँ मत देकर चुनावों में भागीदारी नहीं कर सकतीं, पर कानून में ऐसा कुछ नहीं कहा गया है जो उन्हें किसी पद के लिए चुनाव लड़ने से रोकता हो। "मैं मत नहीं डाल सकती," उन्होंने कहा, "पर मेरे लिए मत डाले जा सकते हैं।"

सो बैल्वा ने यही करना तय किया।

अगस्त 1884 में बैल्वा को इक्वल राइटस् पार्टी ऑफ़ द युनाइटेड स्टेटस् का एक ख़त मिला, जिसमें लिखा थाः

मैडम,

आपको सूचित करते हुए हम सम्मानित महसूस करते हैं कि महिला समान अधिकार के राष्ट्रीय अधिवेशन में आपको राष्ट्रपति पद के लिए नामांकित किया गया है।

बैल्वा को इस ख़बर से इतना अचरज हुआ कि वे सकते में आ गईं और उन्होंने शुरुआत में पत्र को गुप्त रखा। पर तब 3 सितम्बर को उन्होंने नामांकन को स्वीकारते हुए जवाबी ख़त लिखा। इसी के साथ उनका अभियान शुरू हो गया।

बैल्वा ने मैरिएट स्टो को अपना चुनावी साथी, यानी उप-राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में चुना। डैमोक्रैटिक पार्टी के ग्रोवर क्लीवलैण्ड और रिपब्लिकन पार्टी के जेम्स ब्लेन उनके विरुद्ध चनाव लड़ने वालों में मुख्य थे। बैल्वा जानती थीं कि चुनावी अभियान का दौर मुश्किल होने वाला था। राष्ट्रपति पद के लिए खड़े होना महंगा सौदा भी था। अभियान के लिए देश भर में यात्राएं करनी थीं और इसमें पूरा समय लगाना था। यह सब करना आसान नहीं था, खासकर किसी बड़े राजनीतिक दल की आर्थिक मदद के बिना। 1872 में भी विक्टोरिया वुडहल नामक एक महिला ने राष्ट्रपति पद के लिए अपनी उम्मीदवारी का ऐलान किया था। पर उन्हें अपना अभियान चुनाव के काफ़ी पहले ही मुल्तवी करना पड़ा, क्योंकि उनके पास अभियान को जारी रखने के पैसे ही नहीं थे।

उन दिनों सरकारी मतपत्र नहीं होते थे जिन पर सभी उम्मीदवारों के नाम छपे हों। हरेक राजनीतिक दल को अपने मतपत्र छापने और बांटने पड़ते थे। मतलब यह कि जिस दल या उम्मीदवार के पास मतपत्र छापने के पूरे पैसे न हों, उसे मत ही नहीं मिलते थे। बैल्वा पहले राष्ट्रपति चुनाव अभियानों के लिए काम कर चुकी थीं, सो वे जानती थीं कि उसमें क्या-क्या करना होता है। उन्होंने अभियान के लिए पैसे जुटाने की मशक्कत की। इसके लिए उन्होंने देश भर में यात्राएं कीं और जगह-जगह भाषण दिए। अपने समर्थकों को उन्होंने मतपत्र छापने के लिए व्यवस्थित किया।

बैल्वा जानती थीं कि अभियान बड़ा ही जानदार होगा – हालांकि वे यह भी जानती थीं कि व्हाइट हाउस (राष्ट्रपति भवन) और उनके बीच एक बड़ा भारी पर्वत अड़ा-खड़ा है।

पर अब तक आप यह समझ ही गए होंगे कि राह में खड़े पहाड़ बैल्वा लॉकवुड को कभी रोक नहीं पाए थे।
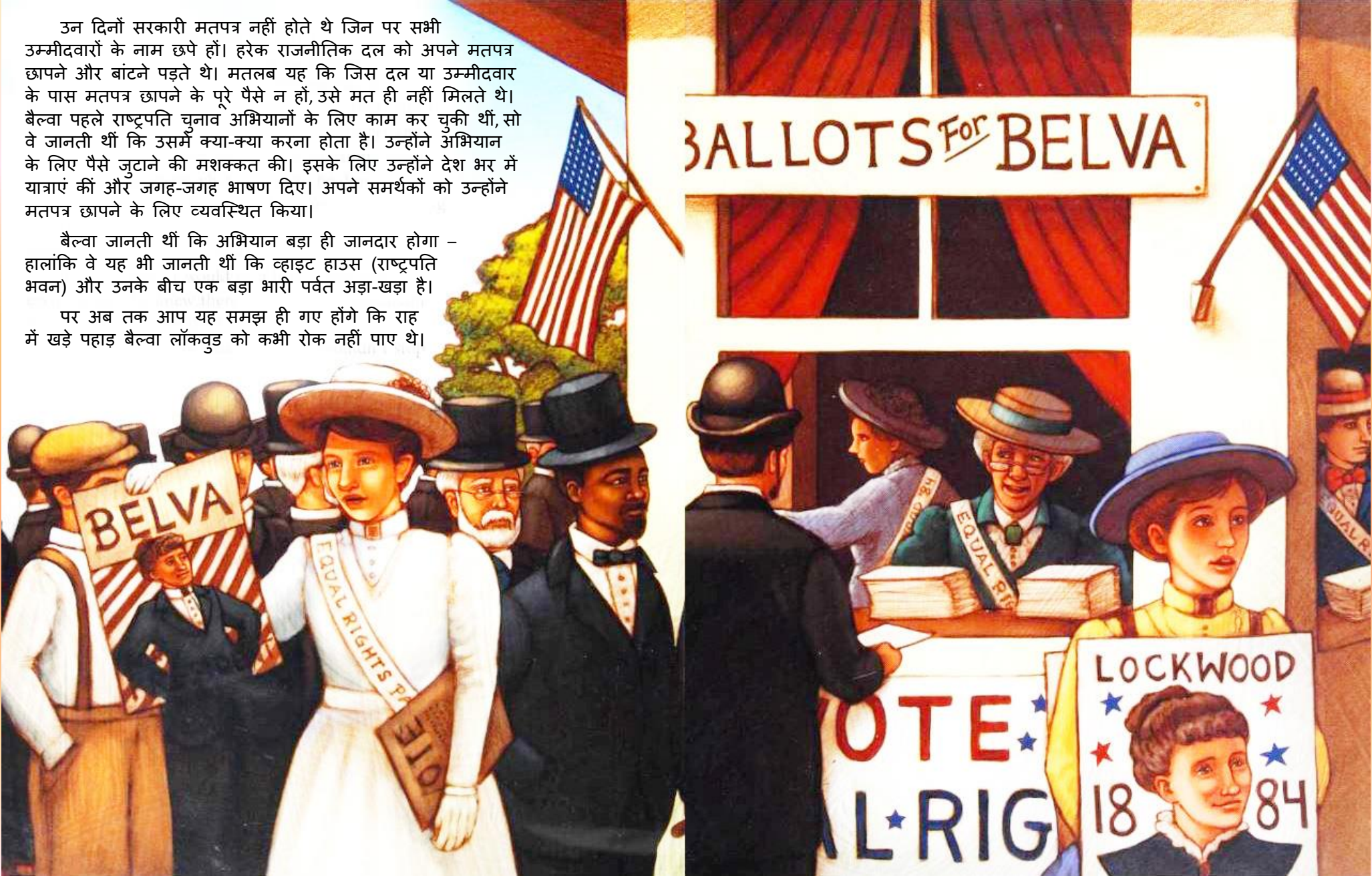
बैल्वा तब नहीं रुकीं जब अख़बारों ने उनके अभियान को ''अब तक का सबसे हास्यास्पद स्वाँग'' कहा। वे तब भी नहीं डिगीं जब पुरुष आलोचकों ने 'बैल्वा लॉकवुड परेड' निकाली जिसमें वे औरतों के कपड़े पहन बैल्वा होने का ढोंग करते थे।

बैल्वा तब भी नहीं रुकीं जब उन्हें उन जगहों पर भी विरोध का सामना करना पड़ा जहाँ उन्हें उसकी कतई उम्मीद नहीं थी। उन्होंने अपनी ज़िन्दगी का ज़्यादातर समय महिलाओं के हक़-हकूकों के लिए काम किया था - दरअसल राष्ट्रपति पद का चुनाव भी वे इसी लिए लड़ रहीं थीं ताकि वे लोगों को यकीन दिला सकें कि स्त्रियों को भी मताधिकार देना चाहिए। इसके बावजूद कई स्त्रियों ने उनके राष्ट्रपति चुनाव लड़ने का विरोध किया। कुछ महिलाओं को लगा कि पुरुषों की दुनिया में घुसपैठ की यह कोशिश करना निरा पागलपन है। पर जो बैल्वा की ही तरह महिलाओं के अधिकारों में विश्वास करती थीं, उन्हें भी लगा कि बैल्वा खुद को हास्यास्पद बना रही हैं और औरतों के हकों के संघर्ष को एक मखौल में बदले दे रही हैं। नैशलन वुमन सफरेज एसोसिएशन ने, जो अमरीका का सबसे बड़ा महिला अधिकार समूह था, बैल्वा से कहा कि उनका समूह राष्ट्रपति चुनावों में बैल्वा का समर्थन नहीं करेगा। एक महिला अधिकार नेता, एबिगेल डनवे ने कहा, ''उनके (बैल्वा के) द्वारा किए गए नुकसान का ... अन्दाज़ा ही नहीं लगाया जा सकता।''
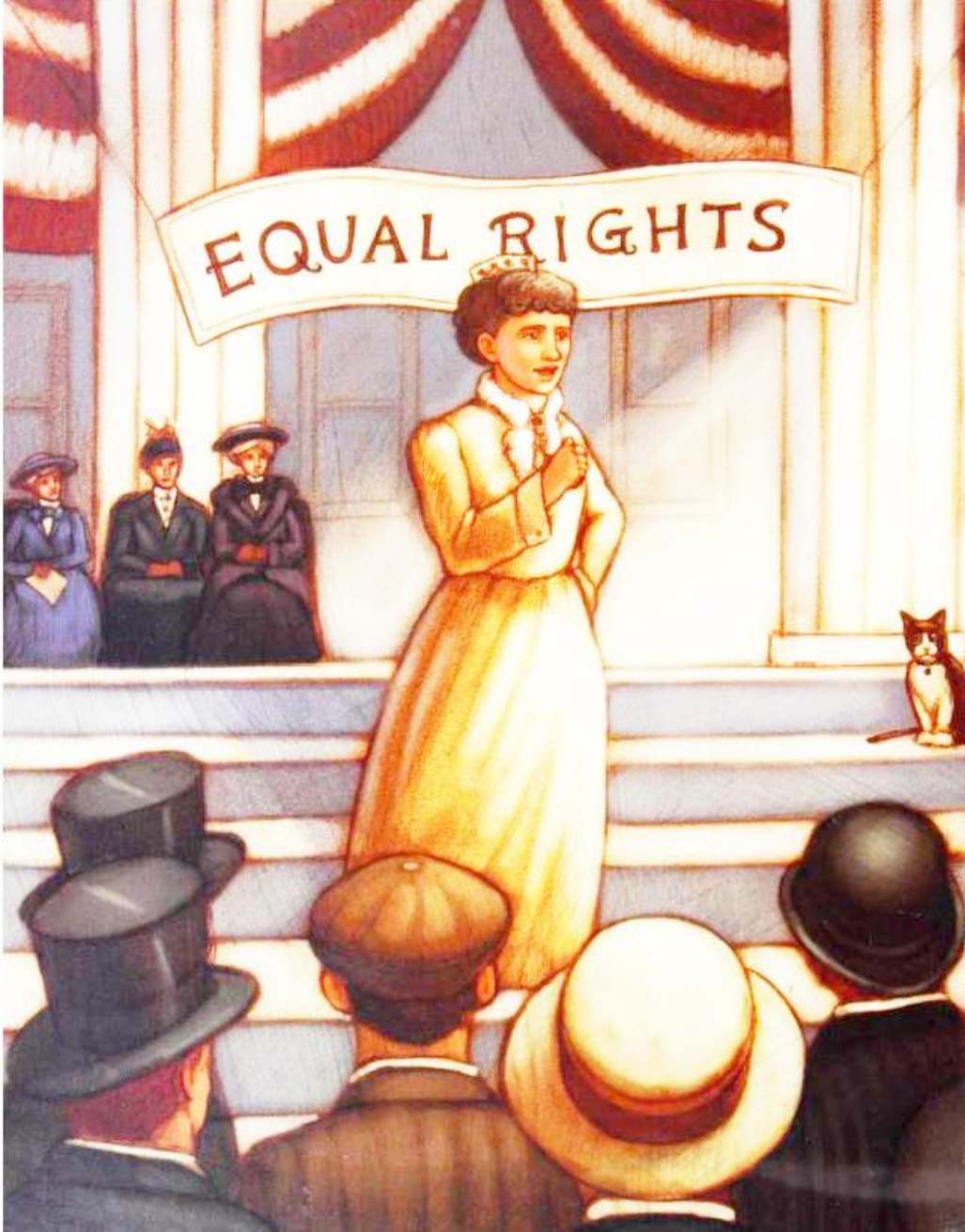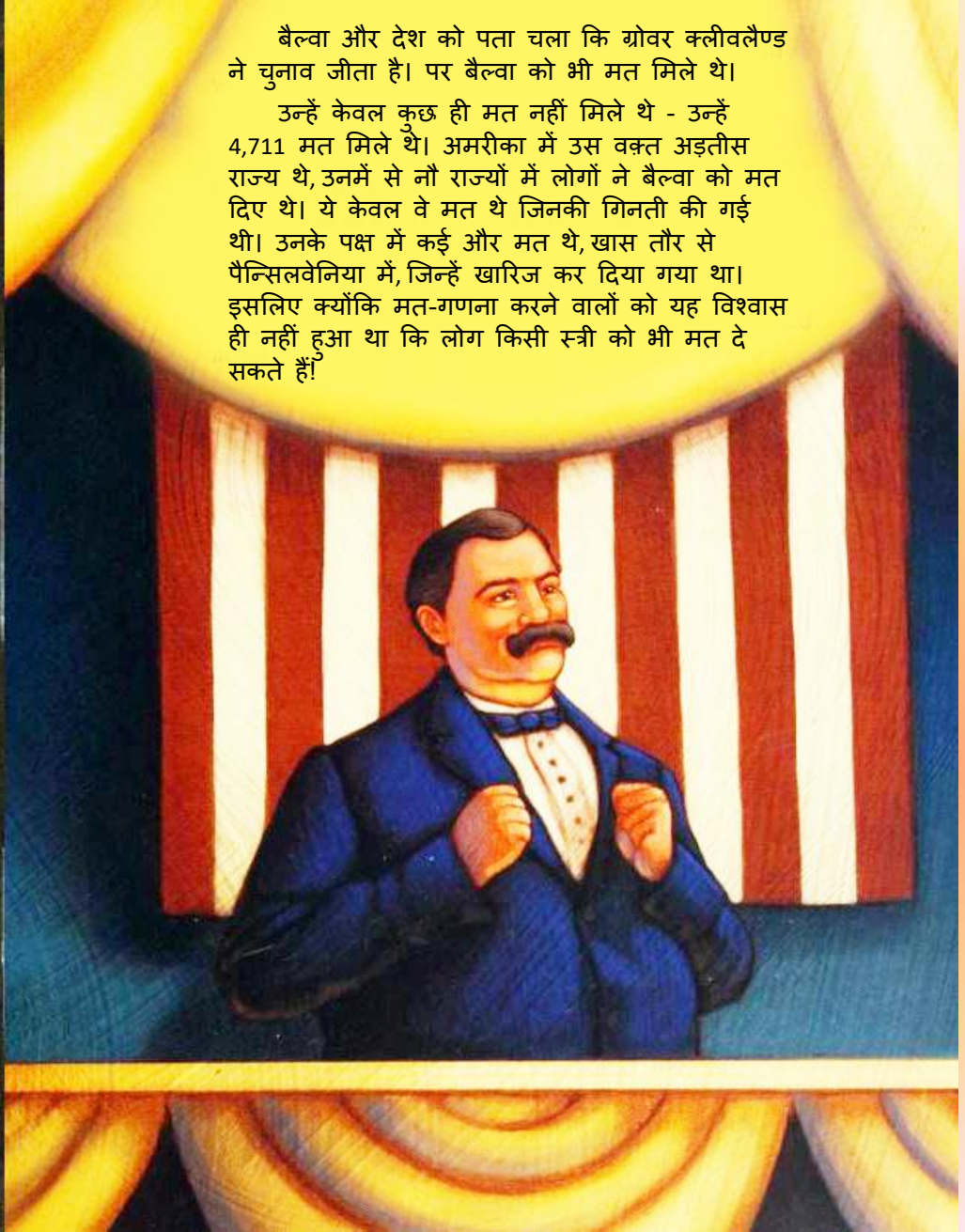
पर बैल्वा का भरोसा डिगा नहीं। वे जानती थीं कि वे जो कर रही हैं वह बेहद ज़रूरी है। और कुछ हासिल हो न हो, कम से कम लोग वह तो सुन रहे थे जो वे कह रही थीं, और जिसे वे महत्त्वपूर्ण मानती थीं। सो वे देश भर में यात्राएं करती रहीं, विभिन्न विषयों पर भाषण देती रहीं। वे लगातार दोहराती रहीं कि सभी अमरीकियों को, चाहे उनकी नस्ल या लिंग कुछ भी क्यों न हो, बराबरी का हक़ मिलना चाहिए।

और लोग उन्हें सुन भी रहे थे। दरअसल काफ़ी लोग सुन और समझ रहे थे। *वॉशिंगटन इवनिंग स्टार* के एक अंक में आख़िरकार यह छपा, ''इतना तो साफ़ है कि अगर मिसेज़ लॉकवुड चुनी जाती हैं तो उनकी नीति ऐसी होगी जो व्यावहारिक सूझ-बूझ वाले सभी लोगों के पसन्द आएगी।''

ऐन चुनाव के दिन बैल्वा के पास करने को कुछ ख़ास था ही नहीं। वे मतदान केन्द्र में जा कर खुद अपने लिए भी मत तो डाल नहीं सकती थीं। सो वे वॉशिंगटन डी.सी. के अपने घर में इन्तज़ार करती रहीं। उन्होंने हरेक उस ख़बरनवीस के लिए अपना दरवाज़ा खोला जो उनसे साक्षात्कार करना चाहता था।

बैल्वा और देश को पता चला कि ग्रोवर क्लीवलैण्ड ने चुनाव जीता है। पर बैल्वा को भी मत मिले थे।

उन्हें केवल कुछ ही मत नहीं मिले थे - उन्हें 4,711 मत मिले थे। अमरीका में उस वक़्त अड़तीस राज्य थे, उनमें से नौ राज्यों में लोगों ने बैल्वा को मत दिए थे। ये केवल वे मत थे जिनकी गिनती की गई थी। उनके पक्ष में कई और मत थे, खास तौर से पैन्सिलवेनिया में, जिन्हें खारिज कर दिया गया था। इसलिए क्योंकि मत-गणना करने वालों को यह विश्वास ही नहीं हुआ था कि लोग किसी स्त्री को भी मत दे सकते हैं!
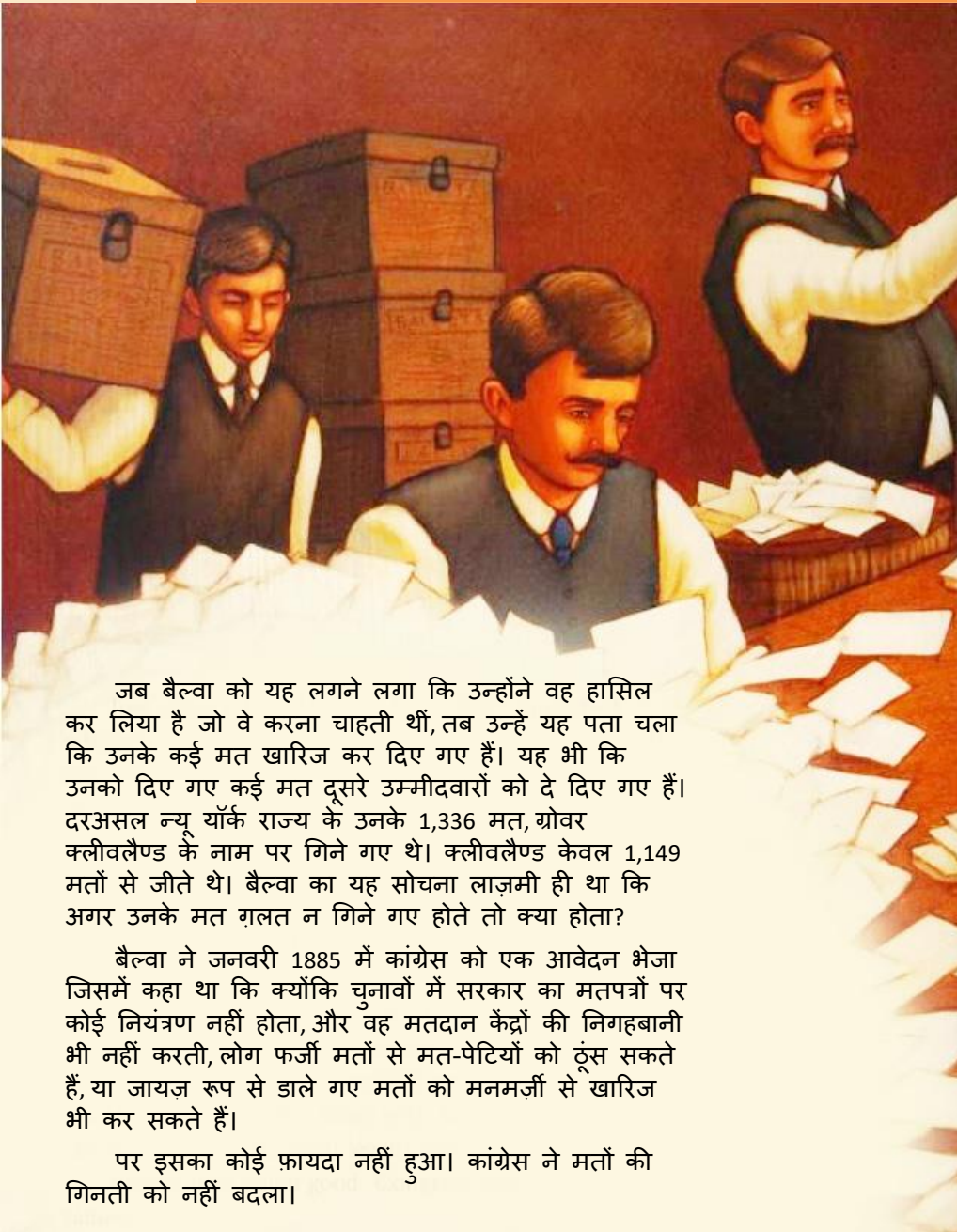
जब बैल्वा को यह लगने लगा कि उन्होंने वह हासिल कर लिया है जो वे करना चाहती थीं, तब उन्हें यह पता चला कि उनके कई मत खारिज कर दिए गए हैं। यह भी कि उनको दिए गए कई मत दूसरे उम्मीदवारों को दे दिए गए हैं। दरअसल न्यू यॉर्क राज्य के उनके 1,336 मत, ग्रोवर क्लीवलैण्ड के नाम पर गिने गए थे। क्लीवलैण्ड केवल 1,149 मतों से जीते थे। बैल्वा का यह सोचना लाज़मी ही था कि अगर उनके मत ग़लत न गिने गए होते तो क्या होता?

बैल्वा ने जनवरी 1885 में कांग्रेस को एक आवेदन भेजा जिसमें कहा था कि क्योंकि चुनावों में सरकार का मतपत्रों पर कोई नियंत्रण नहीं होता, और वह मतदान केंद्रों की निगहबानी भी नहीं करती, लोग फर्जी मतों से मत-पेटियों को ठूंस सकते हैं, या जायज़ रूप से डाले गए मतों को मनमर्ज़ी से खारिज भी कर सकते हैं।

पर इसका कोई फ़ायदा नहीं हुआ। कांग्रेस ने मतों की गिनती को नहीं बदला।
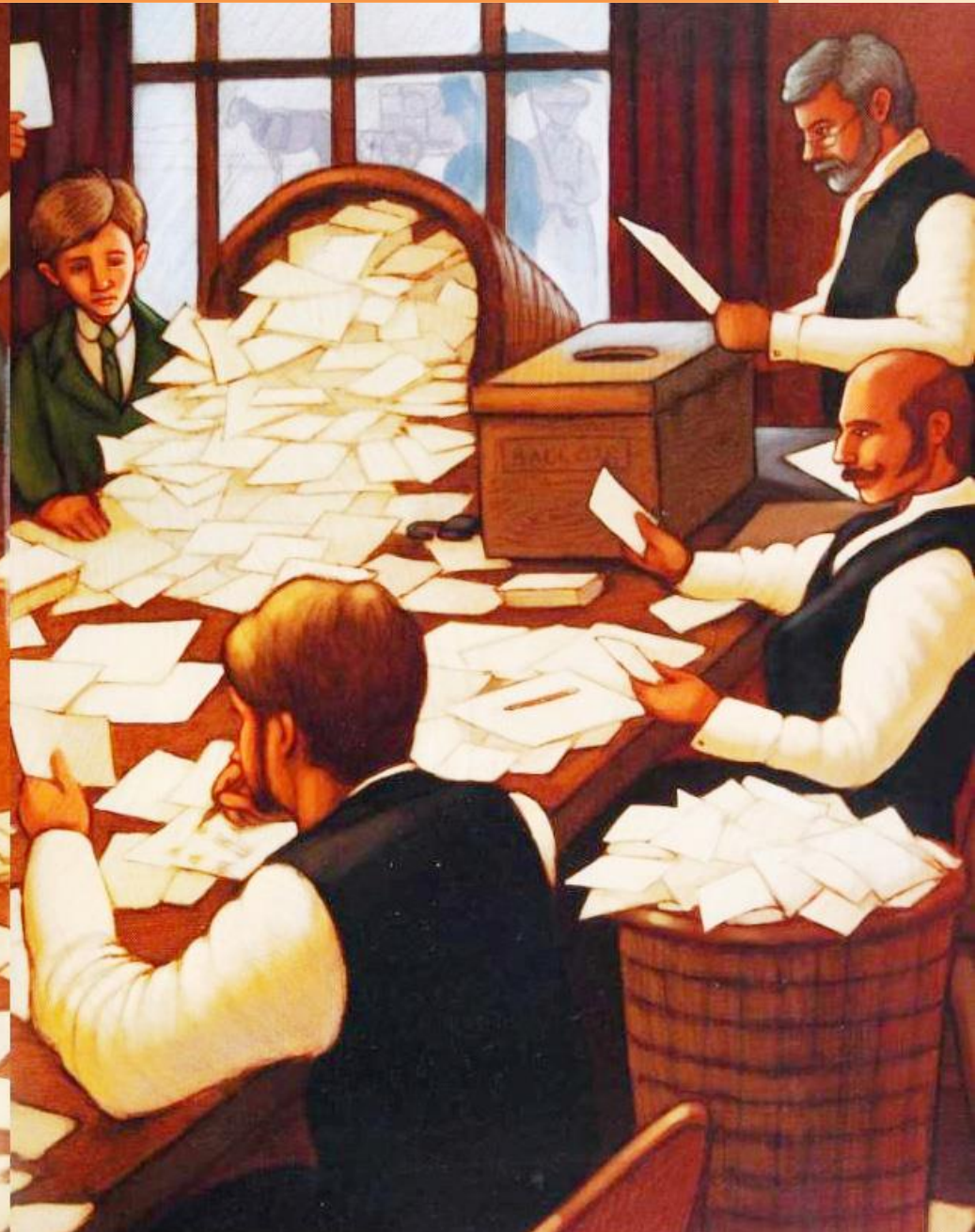
बैल्वा जानती थीं कि कांग्रेस उनकी उम्मीदवारी को स्वीकारे या नहीं वे पहाड़ को उतना तो हिला चुकी हैं जितना उस वक़्त हिलाया जा सकता था। वे राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ने वाली पहली महिला बनीं जिसे दरअसल मत भी मिले थे। और चूँकि उस वक़्त सिर्फ़ पुरुष ही मत डाल सकते थे, ये मत उन्हें पुरुषों ने ही दिए थे। वे पहली स्त्री थीं जिसने यह भी सिद्ध किया कि अमरीकी जनता एक महिला राष्टपति के बारे में सोचने को तैयार है।

वे जानती थीं कि जब सही समय आएगा पहाड़ राह से पूरी तरह हट जाएगा। बैल्वा ने एक बड़ा धक्का तो लगा ही दिया था।

पहाड़ को उसकी जगह से खिसकाने में "इच्छाशक्ति, संकल्प और अथक मेहनत" की ज़रूरत पड़ी थी। साथ ही बैल्वा का यह मकसद तो था ही कि वे दुनिया को यह दिखा देंगी कि एक स्त्री क्या कर सकती है।

लेखिका की टिप्पणी

बैल्वा लॉकवुड के इरादे मज़बूत थे और वे असफलता से डरती भी नहीं थीं। यही कारण था कि वे कई नई चीज़ें करने का साहस जुटा सकीं। उन्होंने जीवन भर पहले से तय की गई सीमाओं को लांघा, उन्हें तोड़ा। उदाहरण के लिए जब वे पचहत्तर वर्ष की हुईं उन्होंने सर्वोच्च अदालत में अपील के एक मामले में चिरोकी कबीले का प्रतिनिधित्व किया। मामला चिरोकी नेशन बनाम युनाइटेड स्टेटस् का था। संघ सरकार की सेना ने अमरीका के इन मूल निवासियों को उत्तरी कैरोलाइना, जॉर्जिया व टैनेसी में उनकी ज़मीनों से बेदखल कर दिया था। पर कबीले के सदस्यों को उस ज़मीन के लिए सरकारी कोष से कोई मुआवज़ा नहीं दिया गया था। बैल्वा ने यह मुकदमा जीता और चिरोकी कबीले को 50 लाख डॉलर का भुगतान करवाया - जो आज भी एक बड़ी रकम है।

1884 के राष्ट्रपति चुनाव में काफ़ी लोगों ने बैल्वा को अपना मत दिया था। उनको कुल कितने मत मिले यह संख्या अलग-अलग बताई जाती है - जो 4 ,149 से लेकर 4,711 जनता के मत (पॉप्युलर वोटस्) हैं। पर मत-गणना अधिकारियों ने यह भी स्वीकरा कि उन्होंने बैल्वा के कई मत खारिज कर फेंक दिए थे, इसलिए बैल्वा के पक्ष में पड़े मतों की संख्या और भी हो सकती है।

हालांकि अमरीका में राष्ट्रपति चुनाव के नतीजे जनता के मतों से तय नहीं होते। हरेक राज्य के कुछ तयशुदा इलैक्टोरल (निर्वाचकीय) मत होते हैं। ये निर्वाचकीय मत आम तौर पर उस व्यक्ति को दे दिए जाते हैं जो जनता के मतों के आधार पर जीतता है। पर ऐसा कोई कानून नहीं है, जो यह कहता हो कि जनमत से जीतने वाले को ही ये निर्वाचकीय मत देने होंगे।

1884 में इन्डियाना के निर्वाचकों ने बैल्वा को सूचित किया कि इन्डियाना में जनता के मत से जीतने वाले ग्रोवर क्लीवलैण्ड को वे निर्वाचकीय मत नहीं देंगे। बैल्वा को बताया गया कि वे निर्वाचकीय मत उनके पक्ष में डाल रहे हैं। हालांकि अब तक कोई भी महिला राष्ट्रपति पद के चुनाव में निर्वाचकीय मत नहीं जीती थी।

इन्डियानापोलिस डेली सेन्टिनल ने ख़बर यह छापी कि बैल्वा के पक्ष में इन्डियाना के निर्वाचकों का मत डालना उनके साथ एक मज़ाक था। पर ऐतिहासिक दस्तावेज बताते हैं कि बैल्वा ने इसे मज़ाक नहीं माना था। राष्ट्रपति चुनावों के बाद हरेक राज्य के निर्वाचकीय मत कांग्रेस (सदन) द्वारा सत्यापित किए जाते हैं। कांग्रेस ने इन्डियाना के निर्वाचकीय मत बैल्वा को देने से इन्कार किया और उन्हें ग्रोवर क्लीवलैण्ड के लिए मान लिया। बैल्वा ने इन्डियाना के निर्वाचकों के कहने के आधार पर इसका विरोध किया। उन्होंने कांग्रेस को आवेदन लिखा कि इन्डियाना को उनके पक्ष में मत डालने का 'अविवादित अधिकार' है।

पर कांग्रेस के सदस्यों ने बैल्वा के आवेदन के बावजूद फैसला नहीं बदला। पर उनके इस दावे को हंसी में नहीं उड़ाया गया। बैल्वा के आवेदन को कांग्रेस की महिला मताधिकार समिति को भेज दिया गया और वह कांग्रेस के औपचारिक रिकॉर्ड का हिस्सा बन गया।

चुनावी नतीजों के बावजूद बैल्वा के जीवन का बेहद महत्त्वपूर्ण पल वह था जब उन्हें राष्ट्रपति पद के लिए नामांकित किया गया था। उन्होंने 1884 में चुनाव लड़ा, और 1888 में दुबारा भी। पर क्या बैल्वा राष्ट्रपति चुनाव लड़ने वाली पहली महिला थीं? इस सवाल का जवाब इस बात पर निर्भर करता है कि आप स्थिति को कैसे देखते हैं।

1872 में इक्वल राइटस् पार्टी (समान अधिकार दल) ने विक्टोरिया वुडहल नामक महिला को राष्ट्रपति पद के लिए नामांकित किया था। इतिहासकारों में इस बात पर मतभेद है कि उन्हें मत मिले भी थे या नहीं। आधिकारिक दस्तावेजों में वुडहल के नाम से कोई मत दर्ज नहीं हैं। साथ ही इस बात पर भी विवाद है कि वुडहल का नाम मतपत्रों में छपा भी था या नहीं।

पर जहाँ तक बैल्वा लॉकवुड का सवाल है इसमें कोई शक नहीं कि उन्हें मत मिले थे। बैल्वा को जनता के वोट मिले थे और निर्वाचकीय (इलैक्टोरल) मत भी जिसका रिकॉर्ड मौजूद है। इस कारण वे पहली अमरीकी स्त्री बनीं जिसे राष्ट्रपति पद के चुनाव में मत मिले थे।

रोचक यह है कि बैल्वा की राष्ट्रपति पद की चुनावी दौड़ में एक और 'पहली बार' जुड़ा हुआ है। वे राष्ट्रपति पद की पहली उम्मीदवार थीं जिसने उप-राष्ट्रपति पद के लिए एक महिला साथी को चुना था। जैराल्डीन फैरारो 1984 में डैमोक्रैटिक उम्मीदवार वॉल्टर मॉन्डेल के साथ उप-राष्ट्रपति पद के लिए खड़ी हुई थीं। इसलिए उन्हें उप-राष्ट्रपति पद के लिए खड़ी होने वाली पहली महिला मान लिया जाता है। पर सच्चाई यह है कि फैरारो किसी प्रमुख दल की पहली महिला उम्मीदवार ज़रूर थीं, पर मैरिएट स्टो जो बैल्वा के साथ उप-राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ीं थीं, वे ही उस पद की पहली महिला उम्मीदवार थीं।

बैल्वा ने आजीवन अन्य महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए लड़ने को प्रोत्साहित किया। वे पुरुषों और औरतों की बराबरी में विश्वास करती थीं। उन्हें यकीन था कि संयुक्त राज्य अमरीका अंत-तंत अपने सभी नागरिकों को कानून के तहत समान सुरक्षा प्रदान करेगा।

और वे सच थीं।